परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, नरौरा
(बुलन्दशहर)

कक्षा–12

आरोह– भाग 2

विषय– हिन्दी

पाठ – श्रम–विभाजन और जाति प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज

लेखक– बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

मॉड्यूल–1/1

प्रस्तुत कर्ता :–
नवीन कुमार भारंगर
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, नरौरा

बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

जीवन परिचय–मानव–मुक्ति के पुरोधा बाबा साहब भीमराव आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 ई. को मध्य प्रदेश के महू नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम श्रीराम जी तथा माता का नाम भीमाबाई था। 1907 ई. में हाईस्कूल की परीक्षा पास करने के बाद इनका विवाह रमाबाई के साथ हुआ। प्राथमिक शिक्षा के बाद बड़ौदा नरेश के प्रोत्साहन पर उच्चतर शिक्षा के लिए न्यूयार्क और फिर वहाँ से लंदन गए। इन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय से पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। 1923 ई. में इन्होंने बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की। ये संविधान की प्रारूप समिति के सदस्य थे। दिसंबर, 1956 ई. में दिल्ली में इनका देहावसान हो गया।

रचनाएँ– बाबा साहब आंबेडकर बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न व्यक्ति थे। हिंदी में इनका संपूर्ण साहित्य भारत सरकार के कल्याण मंत्रालय ने 'बाबा साहब आंबेडकर संपूर्ण वाङ्मय' के नाम से 21 खंडों में प्रकाशित किया है। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं– द कास्ट्स इन इंडिया, जेनेसिस एंड डेवलपमेंट (1917), एनीहिलेशन ऑ.फ कास्ट (1936), मूक नायक, जनता, बहिष्कृत भारत।

श्रम–विभाजन और जाति–प्रथा

<u>पाठ का सारांश–</u> यह पाठ आंबेडकर के विख्यात भाषण 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' (1936) पर आधारित है। इसका अनुवाद ललई सिंह यादव ने 'जाति–पाँति तोड़क मंडल' (लाहौर) के वार्षिक सम्मेलन (1936) के अध्यक्षीय भाषण के रूप में तैयार किया गया था, परंतु इसकी क्रांतिकारी दृष्टि से आयोजकों की पूर्ण सहमति न बन सकने के कारण सम्मेलन स्थगित हो गया। सारांश–लेखक कहता है कि आज के युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। समर्थक कहते हैं कि आधुनिक सभ्य समाज कार्यकुशलता के लिए श्रम–विभाजन को आवश्यक मानता है। इसमें आपत्ति यह है कि जाति–प्रथा श्रम–विभाजन के साथ–साथ श्रमिक विभाजन का रूप लिए हुए है।

श्रम–विभाजन सभ्य समाज की आवश्यकता हो सकती है, परंतु यह श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति–प्रथा श्रमिकों के अस्वाभाविक विभाजन के साथ–साथ विभाजित विभिन्न वर्गों को एक–दूसरे की अपेक्षा ऊँच–नीच भी करार देती है। जाति–प्रथा को यदि श्रम–विभाजन मान लिया जाए तो यह भी मानव की रूचि पर आधारित नहीं है। सक्षम समाज को चाहिए कि वह लोगों को अपनी रूचि का पेशा करने के लिए सक्षम बनाए। जाति–प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता–पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन–भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। ऐसी दशा में उद्योग–धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में परिवर्तन से भूखों मरने की नौबत आ जाती है। हिंदू धर्म में पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी की समस्या उभर आती है।

जाति–प्रथा का श्रम–विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। इसमें व्यक्तिगत रूचि व भावना का कोई स्थान नहीं होता। पूर्व लेख ही इसका आधार है। ऐसी स्थिति में लोग काम में अरूचि दिखाते हैं। अतः आर्थिक पहलू से भी जाति–प्रथा हानिकारक है क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रूचि व आत्म– शक्ति को दबाकर उन्हें स्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है।

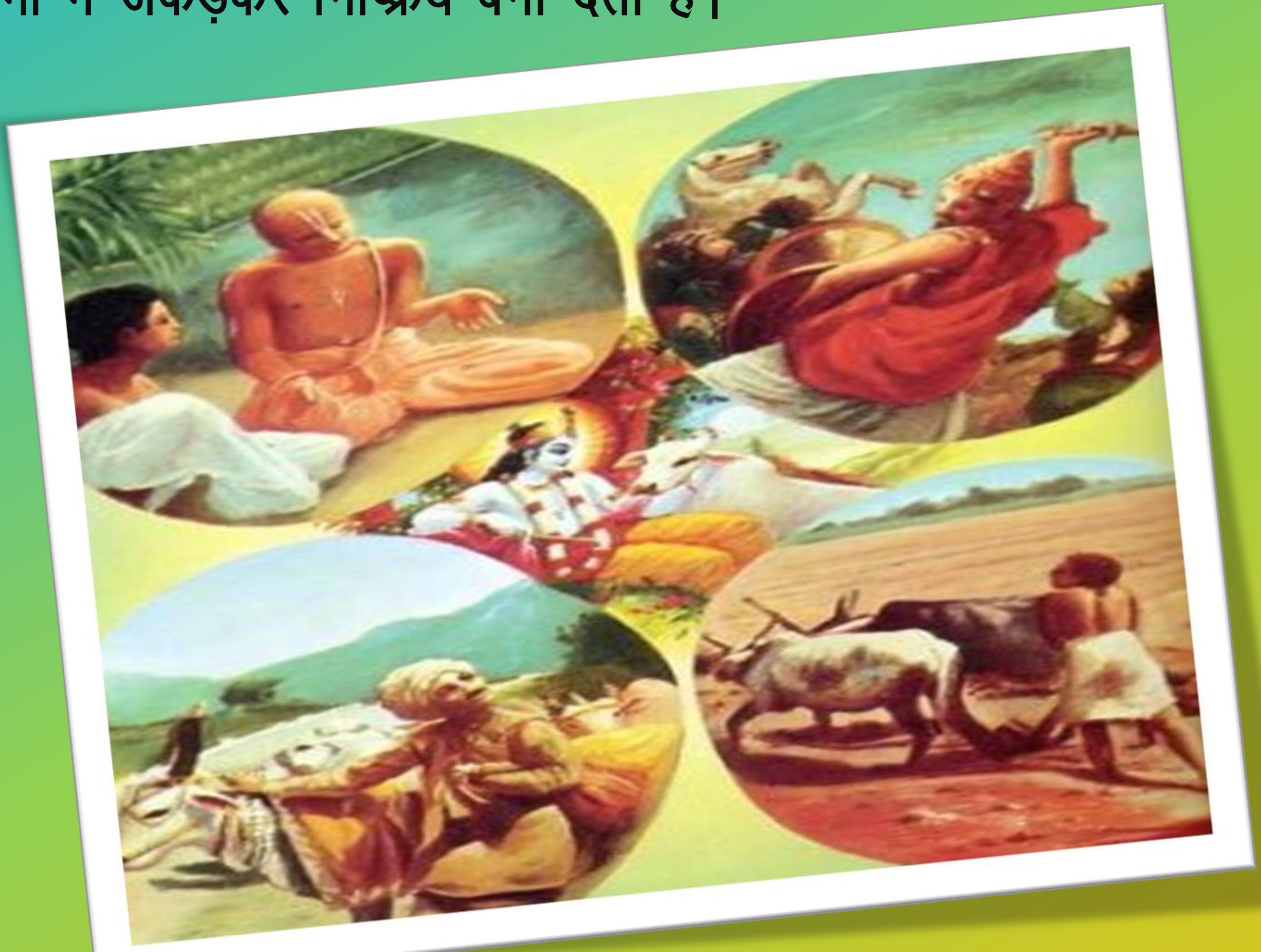

शब्दार्थ–

• विडंबना	–	उपहास का विषय
• आपत्तिजनक	–	परेशानी पैदा करने वाली बात
• अस्वाभाविक	–	जो सहज न हो
• करार	–	समझौता
• प्रशिक्षण	–	किसी कार्य के लिए तैयार करना
• निजी	–	व्यक्तिगत
• दृष्टिकोण	–	विचार का ढंग
• दूषित	–	दोषपूर्ण
• प्रतिकूल	–	विपरीत
• आलोचक	–	निंदक
• तकनीक	–	विधि

प्रश्न–उत्तर

प्रश्न 1. लेखक किस विडंबना की बात कह रहा हैं?

उत्तर– लेखक कह रहा है कि आधुनिक युग में कुछ लोग जातिवाद के पोषक हैं। वे इसे बुराई नहीं मानते। इस प्रवृत्ति को वह विडंबना कहता है।

प्रश्न 2. श्रम–विभाजन के विषय में लेखक क्या कहता हैं?

उत्तर– श्रम–विभाजन के विषय में लेखक कहता है कि आधुनिक समाज में श्रम–विभाजन आवश्यक है, परंतु कोई भी सभ्य समाज श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करता।

प्रश्न 3. भारत की जाति–प्रथा की क्या विशेषता है?

उत्तर– भारत की जाति–प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन तो करती ही है, साथ ही वह इन वर्गों को एक–दूसरे से ऊँचा–नीचा भी घोषित करती है।

प्रश्न 4. हिन्दू धर्म की क्या स्थिति है?

उत्तर– हिंदू धर्म में जाति–प्रथा दूषित है। वह किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की आजादी नहीं देती जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो।

प्रश्न 5. आर्थिक विकास के लिए जाति–प्रथा कैसे बाधक है?

उत्तर– भारत में जाति–प्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर मिला पेशा ही अपनाना पड़ता है। उसे विकास के समान अवसर नहीं मिलते। जबरदस्ती थोपे गए पेशे में उनकी अरूचि हो जाती है औरवे काम को टालने या कामचोरी करने लगते हैं। वे एकाग्रता से कार्य नहीं करते। इस प्रवृत्ति से आर्थिक हानि होती है और उद्योगों का विकास नहीं होता।

प्रश्न 6. लेखक ने जाति–प्रथा की किन–किन बुराइयों का वर्णन किया हैं?

उत्तर– लेखक ने जाति–प्रथा की निम्नलिखित बुराइयों का वर्णन किया है–

1. यह श्रमिक–विभाजन भी करती है।
2. यह श्रमिकों में ऊँच–नीच का स्तर तय करती है।
3. यह जन्म के आधार पर पेशा तय करती है।
4. यह संकट के समय पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती, चाहे व्यक्ति भूखा मर जाए।
5. जाति–प्रथा के कारण थोपे गए व्यवसाय में व्यक्ति रूचि नहीं लेता।
6. यह मनुष्य को सदैव एक व्यवसाय में बाँध देती है भले ही पेशा अनुपयुक्त व अपर्याप्त हो।

धन्यवाद